मध्यमा प्रथम वर्ष

गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 200, न्यूनतम 70

क्रियात्मक : पूर्णांक 125 न्यूनतम 44, शास्त्र : पूर्णांक 75 न्यूनतम 26

सूचना : *इस वर्ष की तथा आगे की सभी परीक्षाओं के लिए गायन के परीक्षार्थियों के साथ केवल तानपूरे का ही प्रयोग होगा।*

शास्त्र :

प्रथम दो वर्षों के सभी विषयों को दोहराना आवश्यक है तथा उनकी विस्तृत परिभाषाओं की जानकारी होनी चाहिए। उसके अलावा निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करना होगा। सात स्वरों में 22 श्रुतियों का विभाजन (आधुनिक मत), वादी स्वर का राग से संबंध, ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आंदोलन की व्याख्या, आंदोलन की चौड़ाई और उसका नाद के छोटे - बड़ेपन से संबंध, तार की लंबाई और आंदोलन संख्या तथा नाद के ऊँचे नीचेपन का पारस्पारिक संबंध। मेल (थाट) और राग के नियम। गणितानुसार हिंदुस्थानी संगीत में थाटों की रचना। पं. भातखंडे प्रणीत 10 थाटों की जानकारी। संधिप्रकाश राग। स्वरसंख्या पर आधारित राग विभाजन (जातियाँ)।

अब तक सीखे हुए रागों का विस्तृत विवरण तथा उनके आलाप लिखना। उनकी समानता - विभिन्नता सोदाहरण स्पष्ट करना। तानों के प्रकार सरल (शुद्ध), कूट, मिश्र, सपाट, वक्र। रागों की पकड़, उठाव, चलन आदि को स्पष्ट करना। सीखे हुए सभी ध्रुपद धमार की दुगुन, चौगुन लिखना। पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर स्वरलिपि पद्धतियों का संपूर्ण ज्ञान। किसी भी गीत को दोनों स्वरलिपियों में लिखने का अभ्यास।

संक्षिप्त जीवनियाँ : स्व. पं. विष्णु नारायण भातखंडे, तानसेन, पं. बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, पं. पन्नालाल घोष अथवा पं. शिवकुमार शर्मा, मसीदखाँ, रजाखाँ इन में से कुल तीन जीवनियाँ, उनके कार्य तथा जीवन की प्रमुख घटनाओं के साथ। वाद्य के विद्यार्थियों के लिए ऊपर निर्दिष्ट विषयों के अलावा निम्नलिखित की जानकारी होनी चाहिए।
गायकों/वादकों के गुण – दोष। परिभाषाएँ : अनुलोम, विलोम, मींड, गमक, सूत, घसीट, जमजमा, मुर्की, छूट, वाद्यों के प्रकार : तत, वितत, घन, सुषिर । अपने वाद्य की विस्तृत जानकारी।

क्रियात्मक :

अ) स्वर ज्ञान :–

विकृत और शुद्ध स्वरों की समुचित पहचान। शुद्ध, विकृत, मिश्रित, स्वर–समूहों के स्वरों को पहचानना तथा लिखित स्वर समूहों को गाना/बजाना। गले से अथवा वाद्य से कण, खटके, मुर्की निकालने का अभ्यास। वाद्य के विद्यार्थियों से एक स्वर पर दूसरा स्वर मींड से बजाना। कण तथा स्पर्श स्वर आदि का प्रयोग वाद्यविशेष के अनुसार अपेक्षित है। आलापों में मींड–गमक आदि का प्रयोग तथा अलंकारों को गाना/ बजाना तथा उनका राग विस्तार में प्रयोग करने की क्षमता।

आ) राग ज्ञान :–

१) निम्नलिखित सभी रागों में एक विलंबित तथा एक द्रुत ख्याल / एक मसीदखानी तथा एक रजाखानी गत करनी है।

१) भूपाली २) कल्याण ३) बागेश्री ४) बिहाग

भूपाली, कल्याण (यमन), बागेश्री तथा बिहाग इन चारों रागों में गायकी अंग से १० मिनिट तक राग विस्तार, आलाप, तान/तोडे सहित गाने बजाने की क्षमता।

२) निम्नलिखित रागों में मध्य लय की एक बंदिश/गत सात मिनिट आलाप, तान/तोड़ों सहित गाने बजाने की क्षमता।

(१) जौनपुरी (२) मालकौंस (३) हमीर
(४) पटदीप (५) तिलंग (६) देसकार
(७) कालिंगडा

३) उपरोक्त रागों का सम्पूर्ण परिचय अपेक्षित है।

४) क्रमांक २ में वर्णित रागों में एक ध्रुपद, एक धमार, (दुगुन, चौगुन के साथ) एक तराना तथा द्रुत एकताल में एक बंदिश - इस प्रकार कुल चार बंदिशें तैयार करनी हैं। वादन के विद्यार्थी अपने वाद्य की विशेषता के अनुसार इतनी ही गतें विभिन्न तालों में तैयार करेंगे। पाठ्यक्रम के सभी रागों में बंदिशे याद हों - इस प्रकार विभाजन किया जाए।

५) भजन / लोकगीत अथवा धुन गाना / बजाना सिखाया जाय।

इ) ताल ज्ञान :-

झूमरा, विलंबित एकताल, तिलवाड़ा, धमार, सूलताल के ठेके हाथ से ताली देकर बोलना तथा इनकी दुगुन करना। पहले सीखे हुए तालों में दुगुन, तिगुन, चौगुन करने का अभ्यास।

अंकपत्रिका :

सूचना :- इस परीक्षा के लिए 35 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। परीक्षार्थी को तानपूरे के आधार स्वर से ही गाना है। हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नहीं है। विलंबित तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 20 मिनिट का समय दे कर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछने हैं। हर कॉलम के प्रश्नों में अलग अलग रागों का प्रयोग करें; जिससे सभी पाठ्यक्रम जाँचा जा सके।

पूछे गए राग में विलंबित बंदिश आलाप तानों के साथ : 14 अंक।
अन्य दो रागों में विलंबित बंदिशें दो आलाप के साथ : 8 + 8 अंक।
कुल अंक : 30।
इस वर्ष के नये रागों में से एक राग में आलाप तान के साथ मध्य लयकी बंदिश : 12 अंक। दूसरे राग में बंदिश 5 तानों के साथ : 8 अंक।
कुल : 20 अंक।

ध्रुपद या धमार की बंदिश ठाह तथा चौगुन में। स्वर वाद्य के लिए गत की बंदिश या तालबद्ध अलंकार ठाह तथा चौगुन में; 15 अंक ।

तराना या द्रुत एकताल की बंदिश : 8 अंक ।

उपशास्त्रीय प्रकार : 8 अंक ।

इस वर्ष के तालों में से किसी एक ताल का ठेका ठाह तथा दुगुन में : 4 अंक । पिछले तालों में से एक ठेका ठाह तथा चौगुन में : 6 अंक ।

कुल : 10 अंक ।

राग पहचानना :– राग वाचक स्वर समूहों से, जिसमे दो राग इस वर्ष के तथा दो राग पिछले वर्ष के हो : 8 अंक ।

स्वर पहचानना :– राग वाचक स्वर समूहों से, जिनमें से एक राग पिछले वर्ष का हो : 6 अंक ।

पिछले एक राग की बंदिश : 4 अंक तथा दो रागों के राग वाचक आलाप : 3 + 3 अंक ।

कुल अंक : 10 ।

स्वर लिपि पढ़ना (चार मात्रा की एक पंक्ति) : 10 अंक।

कुल : 125 अंक ।

लिखित : 75, सर्वयोग : 200 अंक।